मोरंगे

जनवरी – फरवरी 2025

इस बार

याद की धूप छाँव में

बकरियाँ और बघेरा – केशव गुर्जर
नदी में मोटर साइकिल – दिनेश गुर्जर
बस से चले मोटर साइकिल से पहुँचे – निशा गर्जुर
ट्रायल – अरविन्द गुर्जर
ट्रेन का सफर – आलिया बानो
अमरूद की खुशबू – सोनम बानो
लोगों के दिल में प्रेम – अलमास बानो
हमारे घर में तो पैसे भी नहीं है – रामभजन गुर्जर
गाँव में एक दिन की घटना – प्रिंस गुर्जर

गीत कविताएँ

पाली का बंधा – फतेह सिंह गुर्जर
किसान – अभिषेक गुर्जर
साथ साथ – दिनेश गुर्जर
राजा रानी का दर्द – विशाल बैरवा
किसान – अनूप बैरवा
बंदर – लक्ष्मी बैरवा
वो भी क्या वक्त था – लक्ष्मी बैरवा
सर जी – प्रिंस गुर्जर
मोर – मनराज गुर्जर

मनीषा, फैलो

कहानियाँ

बकरी, हाथी और चिड़िया का बच्चा–मनोज गुर्जर
चिड़िया और मिट्ठू–मनराज गुर्जर
घोड़ा और शेर–नरेश गुर्जर
मैं एक बार माफ करता हूँ–सुमित गुर्जर

लेख

राईखेड़ा के घुमन्तू गायक

बात लै चीत लै

हरी काकी थारौ भलौ होजौ

जितेन्द्र गुर्जर, कक्षा–6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

सम्पादन : प्रभात
डिज़ाइन : लोकेश राठौर
वितरण : अंकुश शर्मा
आवरण चित्र : रीना सैनी, फैलो, खवा
वर्ष 16 अंक 175–76

प्रबंधन
विष्णु गोपाल
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
एच–1, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर कॉलोनी,
मानटाऊन, सवाई माधोपुर, राजस्थान
322001

yatra foundation AUSTRALIA

'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

याद की धूप छाँव में

बकरियाँ और बघेरा

एक बार की बात है हमारी बकरियाँ डूँगर में चर रही थीं। मेरे पापा बकरियों को छोड़कर खाना खाने घर आ गए थे। जब वे खाना खाकर वापस गए तो एक बकरी वहाँ नहीं थी। मेरे पापा ने उस बकरी को खूब ढूँढा। रेलवे लाइन पर भी ढूँढने के लिए गए। पर वहाँ नहीं मिली। फिर मेरे पापा डूँगर के पीछे गए। वहाँ देखा कि बकरी को बघेरे ने मार दिया था। मेरे पापा उसे छोड़कर आ गए।

डस दिन के बहुत दिन बाद एक बार फिर मेरे पापा बकरियों को छोड़कर आ गए। एक बकरी को बघेरे ने दाढ़ लगा दी। बकरी चिल्लायी तो मेरे पापा भागते हुए बकरी के पास गए। बघेरा वहाँ से भाग गया। पापा उस बकरी को लेकर आ गए। फिर वे फलोदी से दवाईयाँ लाए।

कुछ दिन बाद हमारे गाँव का एक आदमी डूँगर में बकरी चरा रहा था। तो वहाँ पर बघेरा बकरी को मारने के लिए पास में आने लगा। उस आदमी ने देखा कि उस मादा बेघेरे के साथ तीन बच्चे भी थे। उस आदमी ने मेरे पापा को आकर कहा कि मादा बेघेरे के साथ तीन बच्चे भी हैं।

तब से मेरे पापा डूँगर में बकरियों को छोड़कर नहीं आते हैं।

केशव गुर्जर, समूह– गुलमोहर, गिर्राजपुरा।

भोला शंकर, शिक्षक, उमंग सेंटर रांवल।

नदी में मोटर साइकिल

कुछ समय पहले की बात है, मैं और मेरी माँ, मामा के गाँव जा रहे थे। हम हमारी मोटर साइकिल से जंगल के रास्ते से जा रहे थे। रास्ते में बहुत बड़े बड़े पत्थर थे। हमारी मोटर साइकिल एक बड़े से पत्थर चढ़ गई और टकरा गई। उसका मरधाट टूट गया। हम मोटर साइकिल को टूटे हुए मरघाट से ही आगे ले गए।

मेरे मामा के गाँव के रास्ते में एक बड़ी नदी थी। मैंने सोचा कि हम इस नदी में से मोटर साइकिल को कैसे निकालेंगे। लेकिन वहाँ एक नाव थी। फिर मैंने सोचा कि हम इस नाव से जाएँगे हमारी मोटर साइकिल थोड़ी जाएगी। लेकिन चार लोग आए और हमारी मोटर साइकिल को उठाकर नाव में रख दी। और हम भी नाव में बैठ गए। जैसे ही चली, नाव हिलने लगी। मुझे डर लगने लगा कि नाव नदी में डूब न जाए। फिर नाव एक पत्थर से टकरा गई। मैंने सोचा कि अब यह नाव डूबेगी। लेकिन एक आदमी नदी में गया और नाव को धक्का देने लगा और नाव चल पड़ी। मैंने सोचा कि अब वह आदमी नाव में नहीं जाएगा पर वह आदमी नाव में चढ़ गया। और फिर नाव नदी के दूसरे किनारे पर पहुँच गई। हम उतर गए। उन्होंने हमारी मोटर साइकिल भी उतार दी। फिर हम आगे मोटर साइकिल से मामा के गाँव पहुँच गए।

दिनेश गुर्जर, कक्षा – 8, समूह – शहतूत, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

आस्था वर्मा, शेरपुर

बस से चले मोटर साइकिल से पहुँचे

एक बार मैं और मेरी मम्मी बस से नानी के गाँव जा रहे थे। हम कोटड़ी मोड़ से बस में बैठ गए। बस थोड़ी दूर चली और रुक गई। ड्राईवर बोला–'बस का डीजल खत्म हो गया।' तभी एक आदमी बोला–'मैं खेत को पानी के लिए 15 लीटर डीजल की जरीकेन ले जा रहा हूँ। इसे बस में डाल लो। आगे पेट्रोल पम्प आएगा तो मेरी जरीकेन भरवा देना। ड्राईवर में डीजल बस में डाल दिया। थोड़ी देर बाद पेट्रोल पम्प आया। ड्राईवर ने उसकी जरीकेन भरवा दी और बस में भी और डीजल डलवाया।

बस थोड़ी दूर तक चली और उसका टायर फूट गया। फिर ड्राईवर ने एक आदमी को बोलकर ट्रक मँगवाया। उसने बस को बाबई के बाजार में पहुँचाया। वहाँ टायर ठीक हुआ, पिंचर निकाली गई। फिर बस चली। फिर इन्द्रगढ़ आने ही वाला था कि बस चलते च्लते रुक गई। अब शाम हो गई। थोड़ा थोड़ा अँधेरा भी पड़ने लगा। सारे आदमी बस से उतर गए। वे कहने लगे–'अब हम कभी बस से नहीं जाएँगे।'

हमने मामाजी को फोन किया। फिर मेरे मामा जी हम लेने इन्द्रगढ़ आए।

उसके बाद हम नानी के कभी बस नहीं जाते। ट्रेन से ही जाते हैं।

निशा गर्जुर, कक्षा–8, समूह – शहतूत, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

सुमन गुर्जर, कक्षा–6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

ट्रायल

एक बार मैं सीकर ट्रायल देने गया। सीकर पहुँचे। हमने पानी पिया। हमें सर बुलाने आए कि चलो तुम्हारा मैच अभी है। हमने मैचे खेला और जीत गए। फिर खाना खाकर हमारे रुकने वाले रूम में जाकर सो गए। फिर शाम को भी खाकर सोने चले गए।

सुबह हमारा मैच था। तो हम नहा धोकर जल्दी ग्राउण्ड में गए और प्रैक्टिस की। फिर मैचे खेले हम वह मैच भी जीत गए। फिर हम खाना खाने गए। खाना खाकर सोने चले गए। शाम को हमारा तीसरा मैच था। तीसरा मैच हम हार गए।

फिर हम हमारी वैन में गए और मालपुरा जाने के लिए रवाना हो गए। रात के एक बजे मालपुरा पहुँचे। जाकर स्कूल के कमरे में सो गए। मेरे पास किराये के लिए रुपये नहीं थे। मैं चिंतित था कि आगे अगर बस से जाएँगे तो मैं रुपये कैसे दूँगा ? तभी वहाँ के एक टीचर आए और बोले कि एक आदमी आएगा। उसके साथ चले जाना। पर हमें डर था कि वह हमें कहीं और न ले जाए।

टीचर बोले–'डरो मत। वह तुम्हें टोंक तक ले जाएगा।

तभी वह आदमी आया तो हमें क्या पता था कि वह हमारे साथ के ही एक लड़के के पापा हैं। पर हमने सोचा कि बाइक पर कैसे बैठ पाएँगे।

दूसरे दिन हमने देखा कि हम ले जाने के लिए तो एक कार थी। फिर हम खुश हो गए। आराम से बैठ गए। उसने हमें रास्ते में उतारा फिर वह चले गए। हमने कार को देखा तो उसका घर वहीं था। फिर उसने हमें बस में बैठा दिया। बस में हमें सीट नहीं मिली। आगे एक आदमी उतरा। उसने हमें सीट पर बैठा दिया। तभी टिकिट वाला आया। मैंने सोचा मुझे अब टिकिट लेना है। मैंने जेब चेक की तो वह बोला–'तुम्हारे साथ जो आदमी था, उसने पैसे दे दिए। थोड़ी देर में हम सवाईमाधोपुर पहुँच गए।

मैंने मेरे पापा को फोन किया और बुलाया। फिर मेरे पापा के साथ हम गाँव आ गए।

अरविन्द गुर्जर, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

ट्रेन का सफर

एक बार मैं अपनी दादी के साथ ट्रेन से कोटा जा रही थी। रास्ते में हमने देखा हमारे ट्रेन के पास से एक ट्रेन जोर से निकली। मैं तो डर गई। दादी ने कहा–क्या हुआ? मैंने कहा–कुछ नहीं। फिर मुझे नींद आ गई। मैं सोती रही, सोती रही।

दादी ने जगाया–'अरी अब तो उठ जा। अब तो कोटा ही आ गया।'

मैंने उठकर खिड़की से झाँका तो नदी बह रही थी।

मैंने दादी से कहा–'मुझे पहले जगाया क्यों नहीं?

दादी ने कहा–देख नदी तो अभी आई है। देख कैसे बह रही है।

मैं नदी को देखती रही। देखती ही रही। जब तक ट्रेन नदी के पुल से गुजर नहीं गई। वह नदी चम्बल थी।

आलिया बानो, कक्षा–9, उमंग सेन्टर, (दोबड़ा कला), मखौली।

ज्योति मीना, कक्षा–10, उमंग सेंटर रांवल

अमरूद की खुशबू

मैं और मेरी मम्मी अमरूद के बगीचे में गई थी। वहाँ बहुत सारे अमरूद थे। मुझे एक अमरूद बहुत अच्छा लगा। लोग कहते हैं कि जिस अमरूद को हरिया ने खा रखा होता है वह बहुत मीठा होता है। मैंने कहा–'मम्मी मैं इसे खाऊँगी। इसे तोड़ लूँ क्या।'

मम्मी ने कहा–'बहुत ऊपर है। तुम गिर जाओगी। मैं इसे तोड़ दूँ।'

मम्मी ने उस अमरूद को तोड़ लिया और मुझे दे दिया। मैंने उसे खाया तो वह बहुत मीठा था। इतना मीठा कि मैंने आधा अमरूद मम्मी को भी खाने के लिए दिया। मम्मी ने भी कहा–'बहुत मीठा है।'

पूरा बगीचा अमरूद की मीठी खुशबू से महक रहा था।

मैंने देखा कि हमारे बगल वाले बगीचे में एक पेड़ लगा है। वो पेड़ दिखने में अनार के पेड़ जैसा लग रहा था। मैंने मेरी मम्मी से पूछा कि मम्मी ये अनार पेड़ है क्या?

मम्मी ने कहा–'ये अनार का नहीं अेड़ू का पेड़ है।'

फिर हम घर जाने वाले रास्ते पर चल पड़े। मैंने चलते चलते देखा कि एक मुर्गी अपने छोटे चूजे के साथ दाना चुग रही थी।

मुझे लगा–'जैसे मैं और मेरी मम्मी अमरूद खा रहे थे अभी।'

सोनम बानो, कक्षा–9, उमंग सेन्टर, दोबड़ा (मखौली)

अभिषेक गुर्जर, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

लोगों के दिल में प्रेम

उस दिन मैं जंगल में चारा लेने गई थी। खेतों में बाजरे की कटाई चल रही थी। पूरा जंगल लोगों की आवाजों से गूँज रहा था। कोई बाजरा काट रहा था। कोई बाजरा चौंट रहा था। कोई थ्रेशिंग मशीन से बाजरा निकाल रहा था। सब अपने आपने कामों में तल्लीन थे।

तभी एक खेत में से एक औरत के तेज चिल्लाने की आवाज आई। वह खेत में बाजरा काट रही थी। उसकी आवाज सुनकर सभी लोग अपने कामों को छोड़कर खेत की तरफ दौड़े। मैंने सोचा ये क्या हो रहा है। मैं भी फटाफट अपना चारा बाँधकर और उसे सिर पर रखकर उधर दौड़ी।

वहाँ जाने पर पता चला कि अचानक से साँप उस औरत के पास आ गया था। गाँव वालों ने उस साँप को देखा और जाने दिया। जल्दी वह साँप रेंगता हुआ चला गया और गायब हो गया।

फिर लोगों ने उस औरत से कहा–'डरने की कोई बात नहीं है।'

मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि एक दूसरे के प्रति उन लोगों के दिल में कितना प्रेम है।

अलमास बानो, कक्षा–9, उमंग सेन्टर, दोबड़ा (मखौली)

हमारे घर में तो पैसे भी नहीं है

पहले हम हमारे पुराने गाँव में रहते थे। हमारे गाँव में चोर आते थे। गाँव के आदमी रात के एक बजे तक नहीं सोते थे।

एक रात हमारे घर पर चोर आ जाते हैं और मेरी बुआ जी को पता चलता है। मेरी बुआजी, मेरी दादी के पास गई और बोली कि अपने घर में चोर आ गए हैं।

मेरी दादी जोर से बोली–'हमारे घर में तो अनाज ही नहीं है।'

चोर सब सुन रहे थे।

फिर मेरी दादी और जोर से बोली–'हमारे घर में तो पैसे भी नहीं है।'

वे चोर वहाँ से भाग गए।

रामभजन गुर्जर, कक्षा–5, समूह– गुलमोहर, गिर्राजपुरा।

गाँव में एक दिन की घटना

एक दिन गाँव में हम बहुत सारे बच्चे बैठे थे। दो आदमी रास्ते में भागे भागे जा रहे थे। हमने पूछा कि क्या हो गया ?

उन्होंने कहा कि आग लग गई।

हम भी भागे भागे चले गए।

वहाँ जाकर देखा तो एक लड़के ने गाड़ी जला रखी थी। दो आदमियों ने उस पर पानी पटका। पहले तो आग बंद हो गई फिर वापस चालू हो गई। फिर पानी पटका तो बंद हो गई।

फिर उस लड़के ने कहा कि मैं ऐसा काम करूँगा कि महीने में पाँच हजार मिले। फिर उसे जमा करके गाड़ी लूँगा।

ऐसे कह कर वह कोटा चला गया।

प्रिंस गुर्जर, समूह– गुलमोहर, गिर्राजपुरा।

भूमिका मीना, शिक्षिका, उमंग सेंटर रांवल

गीत कविताएँ

योगिता गुर्जर, कक्षा–6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

पाली का बंधा

साइकिल पर होकर सवार
एक रोज मैं गया बजार
मैंने कुछ सामान खरीदा
देने वाला लालची परिंदा
देख मुझे हो गया शर्मिंदा
तभी भयंकर बारिश आई
फूट गया पाली का बंधा

फतेह सिंह गुर्जर, कक्षा 8, गिर्राजपुरा।

किसान

दिन में भैंस चराता है
साँझ ढले घर आता है
कभी शहर में जाता है
खाद का कट्टा लाता है
देता खेत में खाद किसान
आ जाती फसलों में जान

अभिषेक गुर्जर, कक्षा 8, गिर्राजपुरा।

साथ साथ

कक्षा में बच्चे पाँच सात
शैतानी करते साथ साथ
लंच करते भी साथ साथ
खेल खेलते साथ साथ
स्कूल की छुट्टी होने पर
घर भी जाते हैं साथ साथ

दिनेश गुर्जर, कक्षा 8,
समूह–शहतूत, गिर्राजपुरा।

राजा रानी का दर्द

रानी के तो सिर में दर्द
राजा के था पेट में दर्द
रानी बोली–सुनो जी
डॉक्टर के चलो जी
राजा बोला– चलो जी
चलो जी, चलो जी

डाक्टर ने लगा दी सुई
राजा बोला – पुई पुई
रानी बोली –उई उई

रानी भगती घर को आई
राजा ने भी दौड़ लगाई

विशाल बैरवा, कक्षा–7, हरियाली, कटार।

रमेशी मीना, फैलो, खवा

किसान

दिन भर तो वो खेत में रहता
रात में वहीं टपरी में सोता
अक्सर वो घर पर नहीं होता
घर में खेलें नाती पोता

अनूप बैरवा, कक्षा–6, हरियाली समूह, कटार।

बंदर

आँगन देखो मेरा सुंदर
बैठे हैं इसमें दो बंदर
खिड़की दरवाजे से होकर
घुस गए देखो घर के अंदर
मम्मी आई तेज भागकर
बंदर भागे कूद फाँदकर
ऐसे भागे दोनों बंदर
कभी न देखा पीछे मुड़कर

लक्ष्मी बैरवा, कक्षा 10 उमंग, श्यामपुरा

मोर

डूँगर से एक मोर आया
सुंदर अपना रंग बताया
उसने अपना बच्चा बताया
जोर जोर से शोर मचाया
देखो देखो कितना अच्छा
ये है मेरा सुंदर बच्चा

मनराज गुर्जर, कक्षा 4, गिर्राजपुरा।

शिवानी बैरवा, फैलो, फैलोशिप सेंटर, गणेश नगर रांवरा

वो भी क्या वक्त था

जब मैं बिल्कुल छोटी सी थी
खूब शरारत मैं करती थी
जब भी कोई तितली दिखती
तो मैं उसके पीछे भगती
तितली मेरे हाथ न आती
तो मैं उदास बैठ जाती थी
मुझको बैठी हुई देखकर
मेरी माँ पास आ जाती थी
इतना लाड लडाती थी
मैं गोदी छिप जाती थी

लक्ष्मी बैरवा, कक्षा 10 उमंग, श्यामपुरा,

सर जी

हमें मिला अण्डा सर जी
मत मारो डण्डा सर जी
नहा धोकर आता लेकिन
पानी था ठण्डा सर जी

सर जी बोले– चुप
मैं गया छुप।

प्रिंस गुर्जर, कक्षा 4, गिर्राजपुरा।

शिवानी सैनी, फैलो, छाण

कहानियाँ

बकरी, हाथी और चिड़िया का बच्चा

एक बार की बात है जंगल में हाथी और बकरी रहते थे। एक दिन बकरी ने कहा जंगल में घास चरने जाऊँगी।

हाथी ने वहीं एक पेड़ को हिलाया। पेड़ पत्ते झरे। बकरी ने पत्ते खाए। अब हाथी ऐसे ही पेड़ हिलाता और बकरी पत्ते खा लेती।

एक दिन हाथी ने पेड़ तो उस पेड़ से एक चिडिया का बच्चा पानी में गिर गया। पेड़ की डाल पानी तक बढ़ी हुई थी। बकरी चिड़िया के बच्चे को बचाने पानी में कूद गई।

हाथी की सूँड लम्बी थी। हाथी ने सूँड से बकरी को उठाया। बकरी ने पंजे में चिड़िया के बच्चे को उठा लिया। हाथी ने दोनों को बाहर निकाल लिया। और वे तीनों दोस्त बन गए। तीनों खुशी खुशी रहने लगे।

मनोज गुर्जर, कक्षा–3, समूह – गुलमोहर, उदय सामुदायिक पाठशाला, गिर्राजपुरा।

चिड़िया और मिट्ठू

एक जंगल में एक चिड़िया रहती थी। उसके घोंसले में चार छोटे–छोटे अण्डे थे। कुछ दिन बाद अण्डों में से बच्चे निकले। चिड़िया उनके लिए खाना लेने जाती थी।

एक दिन हाथी ने चिड़िया का घोंसला तोड़ फोड़ दिया। चिड़िया वापस आयी तो उसने अपने बच्चों को नीचे पड़े हुए देखा। वह रोने लगी। तभी वहाँ उसकी दोस्त मिट्ठू आई। चिड़िया ने मिट्ठू से कहा कि मेरे घोंसले को किसी ने तोड़ दिया। मेरे बच्चों को नीचे गिरा दिया। इसलिए मैं रो रही हूँ।

मिट्ठू ने कहा–'इतनी छोटी बात में तुम रो रही हो? मैंने तेरे लिए पहले से ही एक घोंसला बना रखा था। पास वाले जंगल में वह घोंसला है।'

मिट्ठू चिड़िया और उसके बच्चों को नए घर में ले गई। और वहाँ वे सब खुशी खुशी रहने लगे।

मनराज गुर्जर, कक्षा – 4, समूह– गुलमोहर, गिर्राजपुरा।

घोड़ा और शेर

एक जंगल में बहुत सारे जानवर रहा करते थे। उस जंगल का राजा शेर रोजाना एक जानवर को मारा करता था। एक दिन घोड़ा घास चरने जा रहा था। उसे एक शेर की खाल दिखाई दी। घोड़ा दौड़कर खाल के पास गया और झटाक से खाल को पहन ली। फिर वह शेर के पास गया और बोला कि अगर तुम मुझसे दौड़ में हार गए तो इस जंगल का राजा मैं बन जाऊँगा।

जंगल के जानवर इकट्ठे हो गए। शेर और घोड़ा भागने लगे। घोड़े ने शेर को दौड़ में हरा दिया। जंगल का राजा घोड़ा बन गया। शेर के जंगल के बाहर जाने के बाद घोड़े ने शेर की खाल उतार दी।

सारे जंगल के जानवर खुश हो गए।

नरेश गुर्जर, कक्षा–4, समूह – गुलमोहर, गिर्राजपुरा।

मैं एक बार माफ करता हूँ

एक बार की बात है, एक जंगल में चीता, भालू, बंदर और शेर रहते थे। एक दिन भालू ने चीता से बोला कि ये शेर बहुत खराब है। चीता ने ये बात पूरे जंगल में कह दी। फिर चीता ने सोचा कि तुमने ये बात पूरे जंगल में क्यों कह दी ? भालू बेचारा जंगल से ही निकल गया।

बंदर ने कहा कि 'भालू कहाँ है ?'

चीता ने कहा कि ये बहुत खराब है। ये बात मैंने पूरे जंगल में कह दी। इसलिए भालू निकल गया। लेकिन भालू जैसे ही निकला शेर दौड़कर कहा कि 'अरे तुम क्यों जंगल से जा रहे हो ? मैं इसलिए निकलकर आया हूँ कि तुम मत जाओ। मैं एक बार माफ करता हूँ।'

भालू खुश हो गया।

पर चीता घबराहट में था क्योकि उसने बात फैला दी थी।

फिर उसे सब जानवरों ने समझाया। चीता समझ गया। फिर वह खुश रहने लगा।

सुमित गुर्जर, कक्षा–4, समूह – गुलमोहर, गिर्राजपुरा।

प्रिया मीना, कक्षा–2, फैलोशिप सेंटर हिरामन की ढाणी श्यामपुरा

लेख

राईखेड़ा के घुमन्तू गायक

राईखेड़ा दस–पन्द्रह घरों की एक बस्ती है। यह बस्ती सवाईमाधोपुर जिले के खण्डार रोड पर स्थित है। सड़क के एक ओर रणथम्भौर का जंगल है, सड़क के दूसरी ओर खण्डेवला पंचायत में फरिया गाँव के निकट के चरागाह में ये बस्ती बसी हुई है। इस बस्ती में घुमन्तू समुदाय नायक/भोपाओं के घर हैं। आज से कोई आधी सदी पहले वे इस चरागाह में डेरे डालकर रहने लगे थे।

भोपा/नायक पारम्परिक रूप से गायक समुदाय है। इनके पुरखे गाँव–गाँव घूमकर फड़ बाँचने और रावणहत्था पर गीत गायन का काम किया करते थे। गायन के एवज में जो दान–अनुदान, ईनाम–पुरस्कार मिलता उसी से ये जीवनयापन किया करते थे। गायन कला इनके जीवन का आधार थी और यह एक पारंपरिक कलाकार समुदाय हुआ करता था। बढ़ते कुनबे और समय के बदलावों के साथ–साथ इस समुदाय का केवल गायकी पर निर्भर रहना मुश्किल होता चला गया। अब इस समुदाय के लोग आजीविका के लिए मजदूरी के अन्य काम भी करते दिखाई देते हैं। जैसे खेतों में मिर्ची टमाटर तोड़ना, फसल कटाई करना इत्यादि। इस समुदाय ने गायकी को पूरी तरह से छोड़ा भी नहीं है। समुदाय के कुछ लोग आज भी गायन करके गुजारा करते हैं।

फड़ बाँचना

'फड़ बाँचना' एक पारंपरकि लोक कला है। भोपा/नायक समुदाय के लोग पाबू जी, देवनारायण आदि लोक नायकों की चरित गायन करते हैं, उसी को फड़ बाँचना कहते हैं। फड़ सिनेमा के पर्दे जैसे विशाल कपड़े पर चित्रित कथा होती है। एक पूरी फड़ में एक कथा होती है। भोपा और भोपिन मिलकर, मंच पर फड़ की प्रस्तुति देते हैं। अक्सर रात के समय यह लोक गायन होता है। मंच पर फड़ लगा दी जाती है। भोपा गायक रावणहत्था बजाते हुए कथा का गायन करता है। रावणहत्था एक वाद्य है जिसे बजाते हुए गायक गाता है। भोपिन उसकी संगतकार होती है, वह गायन में भोपा का साथ देती है। भोपिन फड़ में चित्रित उन प्रसंगों पर क्रमशः दीए या लालटेन की रोशनी ले जाती है, रात के अंधकार में उस रोशनी में कथा का वह चित्रित हिस्सा या प्रसंग दिखाई देता है, जिसे ये कलाकार गा रहे होते हैं। रावणहत्थे से निकलते सुर और गायकों के गलों से निकले सुरों की जुगलबंदी से अद्‌भुत संगीत सृजित होता है, जिसे सुनकर श्रोता समुदाय विभोर हो उठता है।

रावणहत्था

रावणहत्था, तार, बकरे की खाल, लकड़ी और बाँस से बना एक वाद्य होता है। इसमें लगभग डेढ़ फीट लम्बे मोटे बाँस की बाँसुरी होती है। यह बाँसुरी नीचे की ओर बकरे की खाल से मँढे लोटेनुमा पात्र में लगी होती है। खाल को मँढने या बाँधने के लिए लोहे का गोल कड़ा कसा जाता है। लोटे और बाँसुरी को जोड़ने

के लिए एक लोहे के मोटे तार की छड़ भीतरी पोले हिस्से में लगी होती है। बाँसुरी के

ऊपरी सिरे पर लकड़ी की छोटी बड़ी खूँटियाँ लगी होती है। बड़ी खूँटियों को मोरणा और छोटी खूँटियों को मोरणी कहते हैं। मोरणा नर है, मोरणी नारी है। इनकी संख्या छह सात से पन्द्रह सोलह तक हो सकती है। निचले हिस्से में एक लकड़ी का छोटा टुकड़ा लगा होता है, जिसे घोड़ी कहते हैं। नीचे की ओर घोड़ी से लेकर ऊपर खूँटियों तक दो तार कसे जाते हैं।

रावणहत्थे को गज से बजाया जाता है। गज एक लचीली लकड़ी को मोड़ कर बनायी जाती है। समय के साथ लकड़ी सूख जाती है। गज में प्लास्टिक के तार कसे होते हैं। गज में सिरे पर एक चन्द्राकृति का तार भी लगा होता है जिसमें घुँघरू पिरोये होते हैं। पहले प्लास्टिक के तारों की जगह घोड़ी की पूँछ बालों के तार गज में लगाए जाते थे। बकरे की खाल की डफ, बाँसुरी और तारों से बने रावणहत्थे को जब गज से बजाया जाता है तो मधुर संगीत पैदा होता है। इसमें गायक–वादक मन माफिक धुन और सुर निकालते हुए गाता है।

राईखेड़ा – भोपा समुदाय की बस्ती

एक दोपहर ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के सुमेर जी और अशोक जी के साथ, राईखेड़ा बस्ती में इन घुमन्तू गायकों से मिलना हुआ। लड्डू लाल जी और हनुमान जी ने रावणहत्था पर पहले तो एक फिल्मी धुन निकाली। फिर उन्होंने मीरा बाई से सम्बन्धित एक गीत गाकर सुनाया। फिर अपनी कला और बस्ती से जुड़ी कई बातें बतायी।

उन्होंने बताया कि रावणहत्था वाद्य, जयपुर में आमेर की माताजी से खरीद कर लाते हैं। पाँच हजार का भी मिलता है, दस हजार का भी मिलता है। जैसा लेना चाहें वैसा मिल जाता है। गज के तारों के बारे में उन्होंने बताया इसमें प्लास्टिक के तार लगे हैं। पहले घोड़ी की पूँछ के बाल के तार होते थे, उनसे रावणहत्था के सुर खुलकर निकलते हैं, प्लास्टिक के तारों से थोड़ा दबकर बजता है।

आज से पचास पचपन साल पहले घूमते हुए यहाँ इस उजाड़ में डेरे डाले, तब से यहीं रह रहे हैं। यह छह भाईयों की बसायी बस्ती है। धन्ना, बदरी, गोपी, मोहरपाल, सम्पत और ये लड्डूलाल छह भाई थे। उन छह भाईयों के बढ़े हुए कुनबे की ही ये बस्ती है। सरकार ने कमरे बनाने के लिए सहायता दी है, कमरे बनाए भी है लेकिन जमीन पर पट्टा अभी भी नहीं है। सरकार ने परिवारों को खेत–क्यार के लिए दो पाँच बीघा जमीन भी कहीं नहीं दी है। गाने वाले तो हम दो तीन ही बचे हैं, बाकी लोग मेहनत मजदूरी करते हैं। इसके अलावा भेड़ बकरियाँ चराने निकल जाते हैं।

गाने के लिए बुलावे आते हैं। बैरवा समाज के लोग पाबूजी की कथा गाने बुलाते हैं। गुर्जर समुदाय के लोग देवनारायण की कथा गाने बुलाते हैं। हम लोग खुद भी मीराबाई, नरसी भगत आदि के छोटे–छोटे गीत गाने जाते हैं। कभी कभार जयपुर जैसी जगहों पर भी कार्यक्रम देने जाते हैं। हमने ये अपने बुजुर्गों से ही सीखा। उन्हें गाते बजाते देखते हुए हम भी सीख गए। नई पीढ़ी में अब कोई नहीं सीख रहा है। अब मोबाइल आ गया। सब उसी में लगे रहते हैं।

भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1

राग्यो चालै रग्ग बग्ग
तीन मूँड दस पग।

2

काळौ घोड़ो सफेद सवारी
एक कै बाद दूसरा की बारी।

3

हाथ नहीं है पाँव नहीं है
दादा गोदी ले लै रै।

4

चोंच से तो चुगै नीं
पंखन से उड़ै नीं।

5

चार पटैल इस्या कड़्ड़ा,
जिकै ठुकाया दो–दो फड़्ड़ा।

मनीषा बैरवा, फैलो, फैलोशिप सेंटर जयसिंहपुरा

चुटकले

1

टीचर – यदि आप कहीं जा रहे हैं और बिल्ली आपका रास्ता काट दे तो आप क्या समझेंगे ?

छात्र – यही कि बिल्ली भी कहीं जा रही होगी।

2

राम – मैंने साबुन से अपना शर्ट धोया। अबवह मेरे छोटा हो गया है।

श्याम – तुम उसी साबुन से नहा लो, फिर वह शर्ट तुम्हारे फिट हो जाएगा।

3

एक – यार अपने इलाके का एमएलए कोमा में चला गया।

दूसरा – बड़े लोगों का क्या है भाई, कहीं भी जा सकते हैं।

4

पप्पू जंगल के रास्ते से जा रहा था तभी साँप ने पैर में काट लिया। पप्पू ने पैर आगे करके कहा–'ले काट और काट।'

साँप ने फिर काट लिया।

पप्पू ने कहा –और काट ले।

साँप ने तीन चार बार काट लिया। फिर थककर बोला– तो इंसान है कि भूत।

पप्पू– हूँ तो मैं इंसान ही लेकिन मेरा ये पैर नकली है।

5

टीचर – ए बी सी डी सुनाओ।

संता – ए बी सी डी।

टीचर – और सुनाओ।

संता – और सब बढ़िया, आप सुनाओ।

इरमिस बानो, कक्षा–4, फैलोशिप सेंटर मखौली

बात लै चीत लै

हरी काकी थारौ भलौ होजौ

एक पेमलो हियो। वा बाजार मं गियो। बाजार में एक आदमी बड़ा बणा रियो हो। पेमला नं कियो कि 'तू काँई बणार खा रियो?'

वा आदमी नं कियो कि 'मैं तो बड़ा खा रियो हूँ।'

पेमला नं कियो कि 'दिखां मोकू भी चखानी थोड़ोसोक बड़ो।'

वा आदमी नं कियो कि, 'या लै।'

बड़ा कू चाखर पेमला नं कियो कि, 'या घर म बण जायगो काँई?'

वानै कियो कि, 'हाओ बण जायगो।'

पेमला नं कियो कि, 'इस्याँ तो मैं घर जातो–जातौ याको नाँव भूल जाऊँगो। तू इस्याँ कर दो–चार बड़ा इस्याँइ दे दै। खातौ जाऊँगौ तो नाँव कोनी भूलूँगो।'

वा आदमी नं कियौ कि इस्याँई तो कोनी द्यूँ। पीसा लागै। तू इस्याँ कैतो जा–'बड़ा–बड़ा–बड़ा। जब तू भूलणौ कोनी।'

तो पेमलो गैला मं बड़ा–बड़ा–बड़ा बड़बड़ातो जा रियौ हो। गैला मं एक दचको आ गियो। दचका का जोर सूँ पेमलो भूल गियो कि वा काँई कैतौ आ रियौ हो। वाकू इतनौ याद रियौ कि, 'बा बा बा।' तो अब वा 'बा बा बा' कैतौ जा रियौ हो। लोगबागनं खी कि, 'या पेमला को तो आज दिमाग रिगस गयौ दीखै। पेमलौ पागल हो गियौ दीखै। बा बा बा बा करतौ जा रियौ।'

घर प गियो तो सबसूँ पैली संजना गोड गियो। संजना वाकी जीवन साथी छी। संजना सूँ कियो कि, 'आज तो बा कर दै।'

संजना बोली– बा काँई?

पेमलौ कियौ– बा होवै कोनी है कि गोड़–गोड़।

संजना बोली– 'अरै गोड़–गोड़ काँई?

पेमलौ कियो– 'बा गोड़–गोड़ होवै नी टमाटर की नाँई।

संजना नं कियौ कि 'टमाटर की नाँईं काँई होवै। पैली आच्छ्याँ नांव पूछर आ। खोपरी मत पचावै।'

पेमलो झगड़ौ कर लियौ संजना सूं। आड़ोसण–पडाड़ौसण भागी–भागी आई कि पेमला नं आज फेरूँ काँई उदमाद कर दिया दीखै। पूछबा लागी कि, 'अरी भाई क्यूँ रो री। काँई हो गियौ।'

संजना नं रोतै–रौतै कियौ कि, 'ई मोसूँ झगड़ौ कर रियौ। बा बणा दै, बा बणा दै, कणै कांई बड़बड़ा रियौ।'

'बड़बड़ा' नांव सुणताँई पेमलौ कियौ कि 'हरी काकी थारो भलो होजौ। न तू आती और न या 'बड़बड़ा' कैती। मैं घणी बार सूँ याद कर रियौ पण मोकू बड़ा को नाँव याद नं आ रियौ।' पाछै पेमला नं संजना सूँ की कि 'मोकू बा कर दै बड़ा।'

संजना नं बेसण मं लूण–मिर्ची मुलार झप्प दियाँ सूँ बड़ा कर दिया।

तीसूँ बड़ान कू थाड़ी म घालर दे दिया। पेमला नं खियौ कि 'मैं एकलो नं खाऊँ बड़ा। तू बी तौ खा।'

फेर दोन्यांनंई खाया और घणा राजी होया।

स्रोत–**सन्जू बैरवा, कविता बाई बैरवा,** कटार–फरिया

करिष्मा प्रजापत, कक्षा–9, रा.वि.अल्लापुर

पहेलियों के जवाब –

1 बैलगाड़ी और किसान 2. तवा और रोटी 3. पोटली/गठरी 4. लकड़ी की चिड़िया 5. खाट

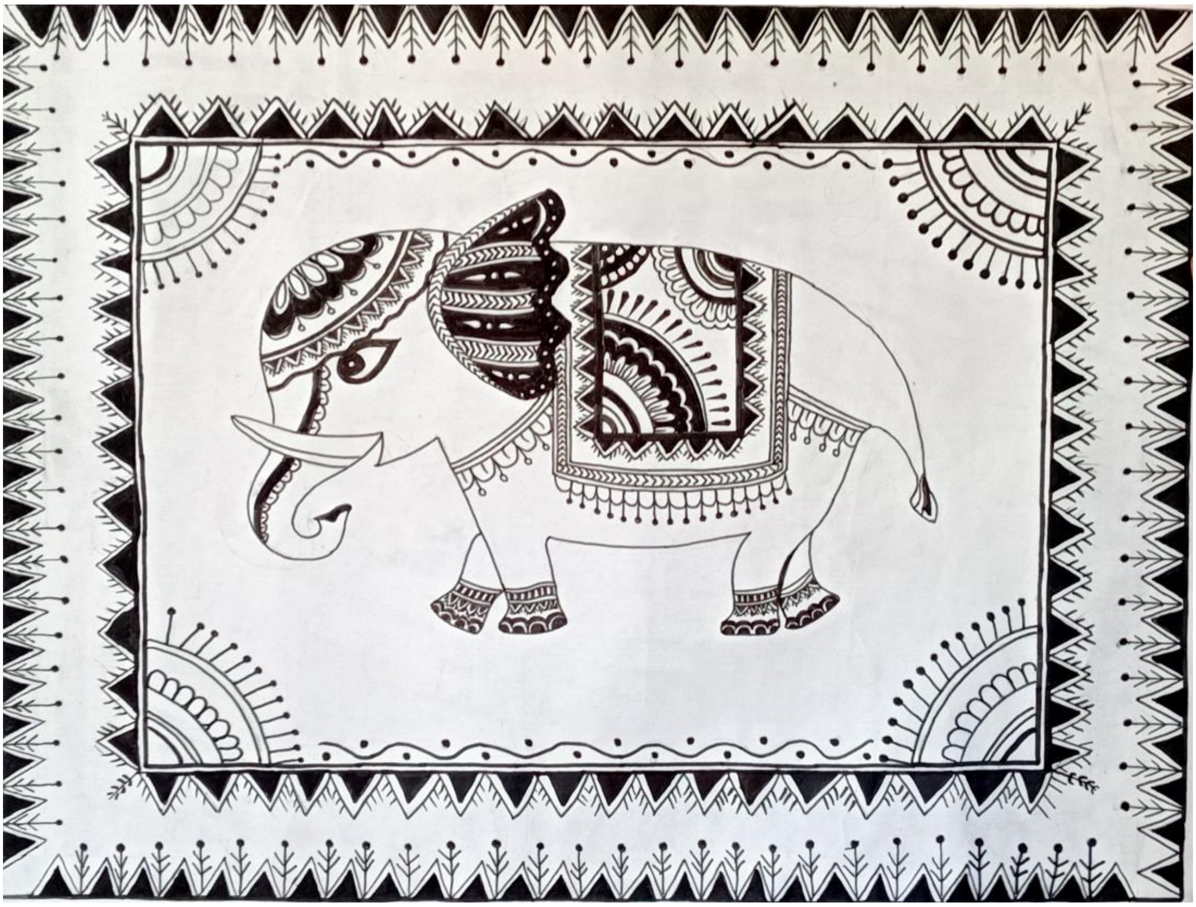

रोहित महावर, फैलो, पुस्तकालय सेंटर अल्लापुर